शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य साहित्य में व्यंग्य

अनिल कुमार शर्मा (शोधार्थी)
डॉ. श्रीमती साधना दीक्षित (निर्देशक)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य साहित्यकारों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। यद्यपि संत साहित्य में कबीरदास जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों की ओर अपने काव्य में प्रहार किया है। संतों की दृष्टि सुधारात्मक रही है। हिंदी में गद्य साहित्य के विकास के साथ व्यंग्य ने भी प्रगति की। व्यंग्य का वास्तविक विकास स्वतंत्रता पश्चात हरीशंकर परसाई के साथ हुआ और व्यंग्य को भी एक सम्मानजनक और गंभीरता के साथ लिया जाने लगा। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रविंद्रनाथ त्यागी व शंकर पुणताम्बेकर का समय जो कि व्यंग्य का आरंभिक दौर माना जाता है, से लेकर आज तक विभिन्न व्यंग्यकारों ने व्यंग्य के माध्यम से विविध विसंगतियों जैसे भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही, राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्र, सामाजिक कुरीतियाँ, जातिभेद, शिक्षा तथा कई अन्य विद्रूपताओं के ऊपर प्रहार कर उन्हें यथार्थ के धरातल पर उजागर कर उनका पर्दाफाश कर लोगो को सोचने पर मजबूर किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में व्यंग्य के विविध आयामों पर विचार किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य साहित्य में व्यंग्य

स्वतंत्रता पूर्व की रचनाओं में भी व्यंग्य का पुट दिखाई देता है। प्रेमचंद की कई कहानियों जैसे 'बड़े भाई साहब', 'शतरंज के खिलाडी', 'नशा', 'पूस की रात', 'कफ़न' व्यंग्य प्रधान कहानियां हैं। 'बड़े भाई साहब' कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्यात्मक लहजे में करारी चोट की है। भगवती चरण वर्मा की 'दो बाँके' व 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी' इसी श्रेणी की कहानियां हैं। राधाकृष्णदास, अमृतलाल नागर, बेढब बनारसी, सम्पूर्णानंद आदि ने भी व्यंग्य कहानियों की रचना की।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य का वास्तविक विकास हरीशंकर परसाई व शरद जोशी के लेखन से हुआ। हरीशंकर परसाई ने व्यंग्य लेखन को एक नई दिशा दी। परसाई के व्यंग्य में समकालीन समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। परसाई जी ने व्यंग्य के माध्यम से राजनीतिक, प्रशासनिक, नौकरशाही, शिक्षा तथा सामाजिक कुरीतियों पर करारा प्रहार किया है।

'भोलाराम का जीव', 'तब की बात और थी', 'वैष्णव की फिसलन', 'निठल्ले की डायरी', 'एक लड़की पांच दिवाने', 'सदाचार का ताबीज' आदि व्यंग्य संकलनों में परसाई जी की सूक्ष्म दृष्टि और सामाजिक विसंगतियों पर करारी चोट देखने को मिलती है। परसाई जी के व्यंग्य विकल्प की उत्तेजना, अगले विकास के दिशाबोध तथा मानवीय सरोकारों से स्फूर्त हैं, जो पाठक को सोचने के लिए बाध्य कर देते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

परसाई जी की रचनाओं के कुछ संवाद दृष्टव्य हैं : "वैष्णव दो घंटे भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, फिर गादी-तकिया वाली बैठक में आकर धर्म को धंधे से जोड़ते हैं। धर्म धंधे से जुड़ जाय इसी को 'योग' कहते हैं।"1

"कारखाना खुला कर्मचारियों के लिए बस्ती बन गई।"

ठाकुरपुरा के ठाकुर साहब और ब्राह्मणपुरा के पण्डितजी कारखाने में काम करने लगे और पास-पास के ब्लॉक में रहने लगे।

'ठाकुर साहब का लड़का और पण्डितजी की लड़की दोनों जवान थे, उनमे पहचान हुई। पहचान इतनी बढ़ गई कि वे शादी करने को तैयार हो गए।'

'जब प्रस्ताव उठा तो पण्डितजी ने कहा 'ऐसा कभी हो सकता है ? ब्राह्मण की लड़की ठाकुर से शादी करे! जाति चली जाएगी।'

'ठाकुर साहब ने भी कहा कि 'ऐसा नहीं हो सकता पर-जाति में शादी करने से हमारी जाति चली जाएगी।'

किसी ने उन्हें समझाया कि लड़के-लड़की बड़े हैं, पढ़े-लिखे हैं, समझदार हैं। उन्हें शादी कर लेने दो अगर उनकी शादी नहीं हुई, तो भी वे चोरी-छिपे मिलेंगे और तब जो उनका सम्बन्ध होगा, वह तो व्यभिचार कहा जायेगा।'

'इस पर ठाकुर साहब और पण्डितजी ने कहा 'होने दो व्यभिचार से जाति नहीं जाती, शादी से जाती है।"2

'दो नाक वाले लोग' व्यंग्य का संवाद :

"स्मगलिंग में पकड़े गए हैं। हथकड़ी पड़ी है, बाजार में से लाये जा रहे हैं। लोग नाक काटने को उत्सुक हैं, पर वे नाक तिजोड़ी में रखकर स्मगलिंग करने गए थे। पुलिस को खिला-पिलाकर बरी होकर लौटेंगे और फिर नाक पहन लेंगे।"3

परसाई जी को कबीर का आधुनिक संस्करण कहा जा सकता है। आर्थिक, राजनीतिक या सामाजिक किसी भी प्रकार की विसंगति हो इनके व्यंग्य बाण सभी को छेदते हुए जाते हैं, यहाँ किसी को अभय दान प्राप्त नहीं।

हरीशंकर परसाई के साथ शरद जोशी का नाम अवश्य लिया जाता है। जोशी जी के व्यंग्य की सबसे बड़ी खूबी उनका शिल्प और वैदग्ध्य है। उनके व्यंग्य में एक आक्रोश है, जो पाठक को सोचने के लिए विवश कर देता है। 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'किसी बहाने', 'यथासंभव', 'तिलस्म' आदि व्यंग्य संकलनों में वे समाज के ठेकेदारों तथा प्रशासनिक कारजुगारियों का पर्दाफाश करते हुए नजर आते हैं।

'अतृप्त आत्मा की रेलयात्रा' में उन्होंने सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया है।

"बड़े साहब ने ही उसे सर चढ़ा रखा है और चढ़ावेंगे क्यों नहीं, सारी गड़बड़ी जो साहब करते हैं, वह वाकिफ है। एक दूसरों की मदद करते हैं। सालों ने दफ्तर को बनिए की दुकान बना रखा है।"4

"डाक्टर वैद्य तो घाट के पंडे हैं, जो मौत की नदी के किनारे बैठ मरने वालों से कमाई कर लेते हैं।"5

पौराणिक कथा प्रसंगों के आधार पर 'मुद्रिका रहस्य' व्यंग्य में वे वर्तमान की असंगतियां प्रस्तुत करते हैं। संतों, मठाधीशों, शिक्षा संस्थानों की कारगुजारियों को वे अपने तीखे व्यंग्य से उघाड़ते हैं।

"धूर्त तपस्या का ढोंग करता है। एक औरत सामने आ गई तो लंगोटी खुल गई।"6

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शरद जोशी ने तीखी भाषा शैली में विसंगतियों पर चोट की है, जिन्हें कुछ उदाहरणों में देखा जा सकता है :

"ताजा अंडा खाने के काम आता है, बासी बेचने के और सड़े अंडे विरोधियों की सभाओं में फेंकने के काम आते हैं। इस प्रकार अंडे किसी देश की जनता का अच्छा स्वास्थ्य बनाने और आर्थिक स्थिति सुधारने में ही मदद नहीं करते, वहां की राजनीति पर भी असर डालते हैं।"7

शरद जोशी छद्म सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करते हुए उसके नग्न सत्य को उजागर करते हैं। बिना किसी लाग लपेट के बिना किसी पक्षपात के सत्य के नजदीक जो यथार्थ है यही शरद जोशी के व्यंग्य की विशेषता है। जोशी जी के व्यंग्य सामाजिक विसंगतियों के साथ-साथ राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र की छद्मता से भी सम्बंधित हैं।

हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के पश्चात रविन्द्रनाथ त्यागी सर्वाधिक लोकप्रिय व्यंग्यकार हैं। त्यागी जी भ्रष्टाचार, घूसखोरी तथा सामाजिक विद्रूपताओं पर अपने व्यंग्य बाण चलाकर वास्तविक और यथार्थ स्थिति को लक्षित करते हैं। 'आत्मलेख', 'पूरब खिले पलाश', 'शोकसभा' इत्यादि व्यंग्य संकलनों में उन्होंने चुनाव, नौकरशाही, नेता तथा लोकगीत के साथ संस्कृत साहित्य के नायक-नायिकाओं की तुलना वर्तमान प्रेमी-प्रेमिकाओं से करना उनका सबसे प्रिय व्यंग्य विषय रहा है। त्यागी जी के व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता उनकी मनोवैज्ञानिक दृष्टि का यथार्थ चित्रण है। त्यागी जी के लेखन में आत्मव्यंग्य भी बहुतायत में देखने को मिलता है। त्यागी जी को ऐतिहासिक कथावस्तु को वर्तमान सन्दर्भ से जोड़ने में महारथ हासिल है। त्यागी जी के व्यंग्यो के कुछ संवाद दृष्टव्य हैं।

"अस्पताल उस जगह का नाम होता है जहाँ आदमी बीमार की हालत में दाखिल होता है और फिर मुर्दा बनकर बाहर निकलता है।"8

"जैसा कि रिवाज है, रात का वक्त लोग अपनी बीवियों को लेकर सोकर बिताते हैं। रात की इसी थकावट को दूर करने के लिए नए और धुले कपड़े पहनकर जिस जगह वे पिकनिक मनाने जाते हैं उस जगह को दफ्तर कहते हैं।"9

"हमारे देश में किसी भी कन्या को प्रेयसी बनाने से पूर्व बहन बनाना बहुत जरुरी है। आज वह आपके हाथ में राखी बाँधेगी और कुछ दिन बाद आप उसकी कलाई में कंगन पहनाएंगे।"10

श्रीलाल शुक्ल का लोकप्रिय उपन्यास 'राग दरबारी' आधुनिक हिंदी साहित्य की एक प्रमुख घटना है। 'राग दरबारी' के माध्यम से श्रीलाल शुक्ल जी ने आधुनिक भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहजता और निर्ममता से अनावृत किया है। राग दरबारी सोद्देश्य व्यंग्य के साथ लिखा गया हिंदी का पहला उपन्यास है।

'राग दरबारी' में लेखक ने शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में लिखा है, "आज की शिक्षा व्यवस्था सडक पर सोई हुई कुतिया की तरह है, जिसे कोई भी कहीं भी लात मार सकता है।" यह उपन्यास की चंद पंक्तियाँ नहीं बल्कि आज की ध्वस्त सरकारी शिक्षा व्यवस्था का दस्तावेज है। ग्रामीण तथा शहरी परिवेश का इतना अनोखा वर्णन शायद ही कहीं देखने को मिले।

'उमराव नगर में एक दिन', 'अंगद का पाँव', 'यहाँ से वहाँ' आदि व्यंग्य संकलनों में श्रीलाल शुक्ल ने आर्थिक, राजनितिक व सामाजिक विसंगतियों के ऊपर व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया है और उनके यथार्थ को पूरी तरह उजागर किया है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

श्रीलाल शुक्ल की संवाद कला बेहद सशक्त है। वे लिखते हैं, "किसको गालियाँ दे रहे हो सवेरे-सवेरे?

'किस्मत को।'

'तुम किस्मत को मानते हो ?'

'क्यों न मानू क्या मैं हिन्दुस्तानी नहीं हूँ ?"11

इतना ही नहीं बल्कि श्रीलाल शुक्ल ने तथाकथित भक्तों पर भी प्रहार किया है। "दो-तीन एंग्लो-इंडियन लड़कियां फुटपाथ पर खड़े होकर हनुमानजी को घूरने लगीं। जबाब में हनुमानजी के भक्त लड़कियों को घूरने लगे।"12

लतीफ़ घोंघी, नरेन्द्र कोहली, सुदर्शन मजीठिया, के.पी.सक्सेना, प्रेम जनमेजय जैसे सशक्त व्यंग्यकारों ने भी व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों, भ्रष्टाचार, गिरती नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों तथा विविध विद्रूपताओं का सहज अंकन किया है।

नरेन्द्र कोहली ने लोकतंत्र, अंग्रेजी शिक्षा, भ्रष्टाचार, परिवार नियोजन, फेशन तथा एतिहासिक कथानक को वर्तमान सन्दर्भ में जोड़कर नया सन्दर्भ दिया है। 'एक और लाल तिकोन' व्यंग्य कहानी में लोगों के अंग्रेजी मोह पर तीखा व्यंग्य किया है, "हिंदी भी कोई भाषा है ? क्लास में जो कुछ बोलो, लड़के सब कुछ समझ जाते हैं और फिर धड़ाधड़ प्रश्न पूछने लगते हैं। उन प्रश्नों का उत्तर न दे सको तो क्लास का अनुशासन बिगड़ता है और उनका उत्तर देना चाहो तो रोज घर पर लैक्चर की तैयारी के लिए छह घंटे पढ़ना पड़े। उससे तो अंग्रेजी ही भली, बिना तैयारी के क्लास में चले गए जो जी में आया बोल आये, न कोई समझेगा न प्रश्न करेगा। किसीने पूछा तो अंग्रेजी में डांट दिया। न कोई अंग्रेजी बोल सकेगा न क्लास का डिसिप्लिन बिगड़ेगा।"13

वर्तमान में प्रेम जनमेजय सर्वाधिक सक्रिय व सशक्त व्यंग्यकार हैं। विभिन्न सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य के माध्यम से तीखा प्रहार करते हैं। व्यंग्य के लिए जिस प्रकार की पैनी दृष्टि और भावों की अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है, वह प्रेम जनमेजय में अद्भुत है।

'राजधानी में गँवार', 'बेशर्मेव जयते', 'पुलिस-पुलिस' आदि कई व्यंग्य संकलनों में वर्तमान समय में उपजी विसंगतियों पर प्रहार किया है। प्रेम जनमेजय का मानना है कि वंचितों पर व्यंग्य नहीं करना चाहिए। व्यंग्य के क्षेत्र में प्रेम जनमेजय का सबसे बड़ा योगदान उनके संपादन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा' है। जिसका संपादन जनमेजय जी कई वर्षों से करते हुए व्यंग्य के क्षेत्र में वही भूमिका निभा रहे हैं, जैसी कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से खड़ी बोली को परिष्कृत करने में निभाई थी।

निष्कर्ष

स्वातंत्र्योत्तर काल में परसाई जी से लेकर आज तक उत्तरोत्तर हिंदी व्यंग्य के क्षेत्र में बदलते सामाजिक परिवेश के अनुरूप व्यंग्य की दिशा भी बदलती रही है। कई बेहतर व्यंग्य संकलनों के मध्यम से वर्तमान में व्यंग्य साहित्य का सबसे सशक्त रूप है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 परसाई हरीशंकर: परसाई रचनावली: भाग 1 पृष्ठ 165, प्रथम संस्करण, 1985, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

2 परसाई हरीशंकर, परसाई रचनावली : भाग 1, पृष्ठ 15, प्रथम संस्करण, 1985, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

3 परसाई हरीशंकर, दो नाक वाले लोग, द्वितीय संस्करण, 1998, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

4 जोशी शरद, तिलस्म, पृष्ठ 20, प्रथम संस्करण, 1999, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली

5 वही, पृष्ठ 20

6 वही, पृष्ठ 52

7 जोशी शरद, किसी बहाने, गौशाला के प्रबंधक, पृष्ठ 144, 1971, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

8 त्यागी रविंद्रनाथ, प्रतिनिधि व्यंग्य, पृष्ठ 142, 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

9 त्यागी रविंद्रनाथ, प्रतिनिधि व्यंग्य, पृष्ठ 143, 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

10 त्यागी रविंद्रनाथ, 'मनोरमा', दिसंबर 2, पृष्ठ 85

11 शुक्ल श्रीलाल, यहाँ के वहाँ, पृष्ठ 28, 2001, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

12 शुक्ल श्रीलाल, यहाँ के वहाँ, पृष्ठ 12, 2001, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

13 कोहली नरेन्द्र, एक और लाल तिकोन, पृष्ठ 125, 2003, डायमण्ड बुक्स, नई दिल्ली